प्रातःक्लास 20.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

ओमशांति। यह तो बच्चे समझते हैं बाप भी है ,टीचर भी है, सदगुरू भी है। तो बाप बच्चों से पूछते हैं यहां जब आते हो तो इन ल.ना. और सीढ़ी के चित्र को देखते हो? जब दोनों को देखा जाता है तो एम–ऑब्जेक्ट और सारा चक्र बुद्धि में आ जाता है। हम देवता बन रहे हैं ,ऐसे सीढ़ी उतरते आये हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को मिलता रहता है। तुम हो स्टुडेंट। एमऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। कोई भी आये उनको समझाओ यह एमऑब्जेक्ट है। इस पढ़ाई से यह देवी–देवता जाकर बनते हैं। फिर 84जन्मों की सीढ़ी उतरते हैं फिर रिपीट करना है। कितना ईजी है। बहुत ईजी नालेज है। इतनी सहज भी है फिर भी पढ़ते2 नापास क्यों हो पड़ते हैं। उस जिस्मानी पढ़ाई से भी यह रुहानी पढ़ाई सहज है। एमऑब्जेक्ट और 84जन्मों का चक्र सामने खड़ा है। यह दोनों चित्र दोनों विजिटिंग रूम में भी होनी चाहिए। सर्विस करने लिए तो सर्विस का हथियार भी होना चाहिए। सारा ज्ञान इसमें ही है। पुरुषार्थ भी हम ही करते हैं। सतोप्रधान बनने लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इसमें अंतर्मुख हो विचार करना चाहिए। घूमने–फिरने जाते हो तो भी बुद्धि में यही होनी चाहिए। यह तो बाबा जानते हैं नम्बरवार हैं। कोई अच्छी रीत समझते भी हैं तो जरूर वह पुरुषार्थ करते होंगे। समझते हैं यह अच्छा पढ़ते हैं। खुद न पढ़ते हैं तो अपन को ही घाटा डालते हैं अपन को तो कुछ लायक बनाना चाहिए ना। तुम सब स्टुडेंट हो , और हो भी बेहद के बाप के। यह भी पढ़ते हैं। इनको मॉनिटर कहो, सम्भालने वाला कहो। है तो सारा अपनी पढ़ाई पर मदार। बाबा तो रोज2 समझाते रहते हैं। यह (ल.ना.) है पद। और यह (सीढ़ी) है 84जन्मों का चक्र। यह पहले नम्बर का जन्म। यह लास्ट नम्बर का जन्म। तुम देवता तो बनते हो ना। अभी है रावण सम्प्रदाय। यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते हैं कि हम रावण सम्प्रदाय हैं। भल कहते भी हैं भ्रष्टाचारी हैं, रावण सम्प्रदाय हैं ;परंतु अपन को पतित रावण सम्प्रदाय समझते नहीं हैं। इसलिए ही बाबा ने प्रश्न लिखवाया है सतयुगी सम्प्रदाय हो या आसुरी सम्प्रदाय हो?रात–दिन का फर्क है ;परंतु इन बातों को भी मनुष्य समझते नहीं हैं अंदर आने से ही सामने अपना एम ऑब्जेक्ट और 84की सीढ़ी सामने .... है। रोज आकर कोई इनके सामने बैठे तो भी स्मृति आये। तुम्हारी बुद्धि में है बेहद का बाप हम आत्माओं को समझा रहे हैं। सारा 84के चक्र का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में भरपूर है तो कितना हर्षित रहना चाहिए। वह अवस्था क्यों नहीं रहती है? क्या बात है जो तुमको हर्षित रहने में रोला डालती है? सीढ़ी का चित्र भी अभी जल्दी ही छप आ जावेगी। यह चित्र जो बनवाते हैं उनकी बुद्धि में भी होगा कि हमारा यह पद है और यह हमारा 84का चक्र है। गायन भी है सहज राजयोग। सो तो बाबा रोज समझाते रहते हैं। बेहद के बाप के हम बच्चे हैं तो उनसे हमको वर्सा जरूर मिलना चाहिए। बाप ने अभी समझाया है तुमने 84जन्मों को नहीं जानते हो। हम तुमको बताते हैं। बाप ने सारा राज़ बताया है। तो जरूर याद करना पड़े। और फिर मैनर्स भी अच्छी चाहिए। बात–चीत करने की फजिल्त(लत) भी अच्छी चाहिए। चलन बहुत ही अच्छी चाहिए। चलते–फिरते ,काम–काज करते बुद्धि में यह जरूर याद रहे कि हम बाप के पास पढ़ने आये हैं। यह ज्ञान सृष्टि के चक्र का ही साथ ले जाना है। पढ़ाई तो बहुत सहज है। स्टुडेंट अगर पूरी रीत न पढ़ेंगे तो जरूर टीचर को खयाल रहेगा। अगर क्लास में बहुत डल बच्चे होंगे तो हमारा नाम बदनाम होगा। इजाफा नहीं मिलेगा। (गव)र्मेंट गेंट नहीं देगी। यह भी स्कूल है ना। इसमें ग्रैंट आदि की तो बात ही नहीं। फिर भी पुरुषार्थ तो कराया जाता है ना। चलन को सुधारो। दैवी गुण धारण करो। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। सर्विस चाहिए। बाप तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही आये हैं ;परंतु बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते। श्रीमत कहे यहां जाओ तो जावेंगे नहीं। कहेंगे यहां गर्मी है। यहां ठंडी है। कुछ भी बाप की पहचान नहीं है। इनमें कौन हमको कहते हैं यह भी समझते नहीं हैं। यह साधारण रथ ही बुद्धि में आता है। दो बाप बुद्धि में आता ही नहीं। बड़े2 राजाओं का कितना सबको डर रहता है। उनके आगे जाने में ही थर2 हो जाते हैं।

बड़ी अथार्टी होती है। यहां तो बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज हूं। रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को कोई भी नहीं जानते हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। कैसे2 बातें करते हैं। क्या2 करते हैं भगवान क्या चीज होती है यह भी समझते नहीं हैं। वंडर है ना। बाप कहते हैं मैं इस साधारण तन में आकर अपना और रचना की आदि,मध्य,अंत का परिचय देता हूं। इस 84के चक्र का राज समझाता हूं। यह सीढ़ी कितनी क्लीयर है। बाप जानते हैं कितने पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। इसलिए उनको भ्रष्टाचारी पतित रावणराज्य कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं तुमको यह बनाता हूं। बनाया था। अब फिर बना रहा हूं। तुम पारस बुद्धि थे फिर ऐसे पत्थर बुद्धि तुमको किसने बनाया? आधा कल्प रावणराज्य में गिरते आते हो। अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। विवके भी कहते हैं बाप है ही सत्य। तो जरूर बाप सत्य ही बतावेंगे ना। यह भी पढ़ते हैं ,तुम भी पढ़ते हो। यह कहते हैं मैं भी स्टुडेंट हूं। पढ़ाई पर अटेंशन देता हूं। एक्युरेट कर्मातीत अवस्था तो अभी कोई की भी बन नहीं सकती। भल कितना भी फोर्स से पुरुषार्थ करूं ;परंतु ड्रामा करने न देगी। ऐसा कोन होगा जो इतना उंच पद पाने लिए 20नाखूनों का जोर न देगा। कहेंगे ऐसा पद तो जरूर पाना चाहिए। बाप के हम बच्चे हैं तो जरूर मालिक होने चाहिए। बाकी पढ़ाई में तो लाचारी होती है। अभी तुमको ज्ञान.....मिला है। शुरू में तो पुराना ही ज्ञान था। अहमब्रह्मोअस्मि। उल्टा–सुल्टा ज्ञान बुद्धि में था। धीरे2 समझते आये। .....(अ)भी हम समझते हैं ज्ञान तो अभी ही हमको मिलता है। बाप भी कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्य बातें सुनाता हूं। फट से कोई जीवनमुक्ति नहीं पा सके। सारा ज्ञान उठाय नहीं सकते हैं। पहले यह सीढ़ी का चित्र थोड़े ही था। अभी हम समझते हैं यह तो बरोबर है हम ऐसे 84जन्म लेते हैं, चक्र लगाते रहते हैं। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। बाबा ने हम आत्माओं को सारा चक्र .....। पहले खयाल किया सीढ़ी को चक्र में लावें ;परंतु सीढ़ी कैसे चक्र में आवेगी? इनमें तो सिर्फ भारतवासी ही दिखाई है। चक्र में और धर्मवाले भी हैं। वह सभी .....में पीछे2 आते रहते हैं। उसमें हमारा क्या जाता? बाप कहते हैं तुम्हारा धर्म बहुत ही सुख देने वाला (है)। बाप ही आकर हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। औरों का सुख का टाइम तो अभी आया है। जबकि मौत...सामने खड़ी है। यह एरोप्लेन, बिजलियां ,टैंक्स आदि आगे थोड़े ही थे। उन्हों के लिए तो अभी जैसे कि स्वर्ग ....कितने महल आदि बनाते हैं। समझते हैं हमको तो सब सुख है। लंदन में कितना जल्दी पहुंच जाते .....स्वर्ग समझते हैं। अब उन्हों को जब कोई समझावे तो स्वर्ग तो सतयुग को ही कहा जाता है। कलियुग को (थोड़े) ही स्वर्ग कहेंगे। नर्क में शरीर छोड़ा पुनर्जन्म भी नर्क में ही लेंगे ना। आगे तुम भी यह समझते नहीं थे। (अभी) समझते हो आगे तो ब्लाइंड के औलाद ब्लाइंड ही थे। ब्लाइंड रावण को कहा जाता है। रावण जब आता ...तो हम गिरने लग जाते हैं। सब विकार आ जाते हैं। तुमको अभी सारा ज्ञान मिलता है। तो चलन आदि कितनी .....की होनी चाहिए। अभी तुम सतयुग से भी जास्ती वैल्युएबल हो। बाप जो ज्ञान का सागर है ....सारा ज्ञान अभी देते हैं। और कोई भी मनुष्य भक्ति और ज्ञान को समझ न सके। मिक्स कर दिया है। समझते शास्त्र पढ़ना यह ज्ञान है और पूजा करना भक्ति है। तो अभी बाप गुल2 बनाने कितनी मेहनत करते हैं। ....को भी तरस आना चाहिए हम बाप को बुलाते हैं, हम पतितों को आकर पावन फूल बनाओ। अभी बाबा ....हैं तो अपन पर भी रहम करना चाहिए क्या हम ऐसे फिर नहीं बन सकते हैं। नैलत डालनी चाहिए। अभी ....हम बाबा के दिल पर नहीं चढ़े हैं। अटैंशन नहीं देते हैं बाप कितना रहमदिल है। बाप को बुलाते हैं कि पतित दुनियां में आकर हमको पावन बनाओ। तो जैसे बाप को रहम पड़ता है वैसे बच्चों को भी रहम (पड़ना) चाहिए। नही तो सदगुरू निंदक ठौर न पाये। यह तो किसको स्वप्न में भी साद(शायद) नहीं होगा....सदगुरू कौन है। वह लोग गुरूओं के लिए समझ लेते हैं कि कहां गुरू सराप न दे देवे। अकृपा न हो जाये। बच्चा ...हुआ समझेंगे यह गुरू की कृपा हुई। अल्पकाल सुख को मानते हैं। यहां तो यह है आधा कल्प की सुख

की बात। तो बाप कहते हैं बच्चे अपन पर रहम करो। तो देही अभिमानी बनो तो धारणा भी होगी। सब कुछ आत्मा ही करती है। मैं भी आत्मा को ही पढ़ाता हूं। अपन को आत्मा पक्का समझो। बाप को याद करना है। बाप को प्यार ही न करेंगे ,याद ही न करेंगे तो विकर्म कैसे विनाश होंगे? भक्तिमार्ग में भी याद तो करते हैं ना। हे भगवान, तुम रहमदिल हो। लिबरेटर हो। हमको गाइड करो। यह भी गुप्त ....उनकी महिमा है। बाप आकर सब बतलाते हैं। भक्तिमार्ग में तुम याद करते हो। मैं आउंगा तो जरूर अपने ही समय पर। मुझे वह पावर नहीं है। जब चाहूं तब आउं। नहीं। ड्रामा में जब नूंध है तब ही आता हूं। बाकी ऐसे खयालात भी कब नहीं आती है। तुमको पढ़ाने वाला वह बाप है। यह भी उनसे पढ़ते हैं। वह तो कोई भी खता नहीं करते है। किसको रंज नहीं करते हैं। नम्बरवन टीचर है। वह सच्चा बाप तुमको सच्च ही सिखलाते हैं। सच्चे के बच्चे भी सच्चे। फिर झूठे के बच्चे बनने से आधा कल्प झूठे बन पड़ते हो। सच्चे बाप को ही भूल जाते हो। बाप कितना क्लीयर समझाते हैं। पहले2 तुम यह बताओ यह सतयुगी नई दुनियां है या कलियुगी पुरानी दुनिया है? तो मनुष्य समझे कि यह प्रश्न तो बहुत अच्छा पूछती है। यह तो आसुरी राज्य है। आसुरी राज्य में मनुष्य का क्या हाल होगा? आसुरी बुद्धि है। वहां 5विकार होते नहीं। यह है तो बहुत सहज समझाने की बात ; परंतु जो खुद ही नहीं समझते हैं तो प्रदर्शनी में क्या समझावेंगे? सर्विस के बदली और ही डिससर्विस कर .....। बाहर में जाकर सर्विस करना कोई मासी का घर नहीं है। बड़ी समझ चाहिए। बाबा हरेक की चलन से समझ सकते हैं। और ही तंगे कर देते हैं। बाप तो बाप है। बीच में तंग तो हम लोग होते हैं। खिट2 साकारों साथ होती है। बाप तो कह देते हैं यह भी ड्रामा में था। कोई भी आते हैं तो ब्रह्माकुमारी को समझाना ठीक है। नाम भी ब्रह्माकुमारियों का है ना। नाम बाला भी ब्रह्माकुमारियों को का ही होना है। यह है आग की दुनियां। सभी 5विकारों में जले हुए हैं। उन्हों को जाकर समझाना कितनी डिफीकल्टी होती है। कुछ भी समझते नहीं। बाबा खुद भी देख रहे हैं। सिर्फ इतना कहेंगे ज्ञान तो बहुत अच्छा है। खुद समझते कुछ भी नहीं हैं। विघ्न पिछाड़ी विघ्न तो पड़ते हैं ना। यह तो बाप ही जानते हैं। बहुत कड़े2 विघ्न आते हैं। विघ्नों के लिए फिर युक्तियां रचनी पड़ती हैं। यह करो, सम्भाल रखो। पुलिस का पहरा रखो। चित्रों को इंश्योर करा दो। पुलिस के पहरे से भी क्या होता है। ढेर स्टुडेंट, ढेर पुलिस आपस में ही लड़ पड़ते हैं। वह क्या जानें? तुम लोग कौन हो। यह यज्ञ है ना। तो विघ्न पड़ेंगे ही। सारी पुरानी दुनियां इनमें स्वाहा होनी है। नही तो यज्ञ नाम क्यों पड़े? यज्ञ में स्वाहा होते हैं ना। इसमें सारी पुरानी दुनियां स्वाहा होनी है। इसलिए रुद्र यज्ञ नाम पड़ा। ज्ञान को तो पढ़ाई कहा जाता है। यह पाठशाला भी है। तो यज्ञ भी है। पाठशाला में पढ़कर तुम देवता बनते हो। फिर यह सब यज्ञ में स्वाहा हो जाते हैं। समझाने का भी खिर चाहिए ना। समझा वह सकेंगे जिनकी रोजना प्रैक्टिस होगी। प्रैक्टिस ही नहीं तो वह क्या बात कर सकेंगे? जबान का भी मिठास चाहिए ना। बाप समझ सकते हैं फलाने यह कम्र(र्म) कर सकते हैं या नहीं। दुनियां के मनुष्यों लिए स्वर्ग अभी है अल्प काल के लिए। तुम्हारे लिए स्वर्ग आधा कल्प लिए होगा। विचार किया जाता है तो बड़ा ही वंडर लगता है। अभी रावणराज्य खतम हो रामराज्य स्थापन होता है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। ढू(झू)ठी बातें कितनी बैठ बनाई हैं। कुछ भी समझ नहीं सकते हैं। ड्रामा में भक्ति और ज्ञान की नूंध है। यह सीढ़ी देख बड़ा वंडर खाते है। बाप ने क्या2 समझाया है। यह भी बाप से सीखा है जो समझाते रहते हैं। जो बहुतों का कल्याण करते हैं उनको जास्ती जरूर फल मिलेगा। पढ़े आगे अनपढ़े जरूर भरी ढोवेंगे। बाप रोज2 बच्चों को समझाते हैं। अपना कल्याण करो। यह तो चित्रों को सामने देखने से ही नशा चढ़ जाता है। इसलिए बाबा अपने कमरे भी चित्र रख दिये हैं। एम ऑब्जेक्ट कितनी सहज है। इसलिए मैनर्स ,कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। दिल साफ तब मुराद हासिल हो सकते हैं। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुड0।